

सुरापति

17वीं शताब्दी में सुरापति ने जावा में डच ईस्ट इंडिया कंपनी (VOC) के खिलाफ विद्रोह किया। जावानीस और यूरोपीय दोनों ने उसके बारे में लिखा। उन्होंने बहुतों को महान कार्यों के लिए प्रेरित किया और दूसरों को भय से भर दिया।

मूल रूप से बाली से, सुरापति बटाविया (जकार्ता) में दासता से भाग गए और अन्य बालिनी भगोड़ों के एक समूह का नेता बन गए। शुरुआत में उन्होंने VOC की सेवा में लड़ाई लड़ी। हालांकि बाद में VOC ने सुरापति को दुश्मन घोषित कर दिया। सुरापति पूर्वी जावा में अपना दरबार स्थापित करने में सफल रहे, जहाँ एक संप्रभु के रूप में, उन्होंने सहयोगियों के साथ खुद को घेर लिया। 1707 में VOC के साथ लड़ाई में लगे घावों से उनकी मृत्यु हो गई। आज भी इंडोनेशिया में डचों के खिलाफ उनके संघर्ष के लिए उनकी प्रशंसा की जाती है। 1975 में उन्हें *पहलवान नैशनल इंडोनेशिया* (इंडोनेशिया का राष्ट्रीय नायक) घोषित किया गया, जो एक इंडोनेशियाई को प्राप्त होने वाला सर्वोच्च सम्मान है।

पश्चिम जावा से "सुरापति बाबा", सूखे ताड़ के पत्ते पर लिखावट, c. 1750.

सुरापति और फ्रांसिओज टैक का प्रतिनिधित्व करने वाले मुखौटे। 1947 से पहले इस तरह के मुखौटे शास्त्रीय जावानीस *वेयांग टोपेंग* नृत्य और थिएटर प्रदर्शन में उपयोग किए जाते हैं।

कोनॉल परिवार के साथ सुरापति और एक गुलाम दासी, जैकब कोमैन, 1665

सुरापति और फ्रांसिओज टैक के बीच लड़ाई वाला ग्लास पेंटिंग, c. 1900-1950।

सुरापति, अब्दोल मोएईस, 1965 संस्करण।